तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि

शोध-प्रविधि

शैक्षिक जगत में अनेक प्रकार की समस्याएँ सामने आती हैं। इन सभी समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन करना सरल कार्य नहीं। फिर भी शिक्षा के क्षेत्र में समस्याओं के अध्ययन हेतु, उनके समाधान के लिए शोधकर्ता को सुनियोजित क्रम में शोध को कई चरण पार करने होते हैं। प्रत्येक अनुसंधान एक विशेष प्रकृति की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है। इस समस्या के समाधान के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु समुचित अनुसंधान विधि को अपनाना होता है। अनुसंधान समस्या की प्रकृति के आधार पर शोध का निर्धारण लिया जाता है।

शोध विधि विज्ञान में समस्या सम्बन्धी सामान्य क्रियाओं को दिया जाता है तथा सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा की सहायता से परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया जाता है। उनकी पुष्टि के लिए प्रकरणों, परीक्षणों का चयन तथा प्रश्नों का संकलन किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में विधि को समान अर्थ में ही प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता ने अनुसंधान प्रविधि, समाष्टि, न्यायदर्श, उपकरणों का चयन प्रशासन, अंकन आंकड़ों का संकलन तथा क्रमबद्ध रूप प्रदान किया जाता है, जिसकी सहायता से प्रथम अध्याय में लिखे गये उद्देश्यों की परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जाता है तथा निष्कर्ष प्राप्त किया जाता है।

3.1 शोध विधि-

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

3.1.1 ऐतिहासिक अनुसन्धान-

ऐतिहासिक अनुसन्धान को ज्ञात करने से पूर्व इतिहास और ऐतिहासिक ज्ञान की प्रकृति को ज्ञात करना आवश्यक है। अब इसका अर्थ भूतकालीन अभिलेख तक सीमित हो गया है। यद्यपि भूतकालीन अभिलेख पृथ्वी, नक्षत्र आदि सभी के होते हैं किन्तु हम मानव–इतिहास की ही चर्चा करते हैं।

इतिहास क्या है?– मानव की उपलब्धि का पूर्ण, सही और अर्थपूर्ण अभिलेख इतिहास कहलाता है। यह केवल कुछ घटनाओं की सूचीमात्र नहीं होता अपितु एक विशेष समय एवं स्थान पर घटित मानव–जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का एक सत्य, सुनियोजित एवं परीक्षित अभिलेख होता है। इस इतिहास का प्रयोग भूतकाल की पृष्ठभूमि में वर्तमान को समझने एवं भविष्य के लिए पूर्व–कथन करने के लिए, किया जाता है जिससे भविष्य के सम्बन्ध में उचित निर्णय करने में सरलता हो सके। यह कहावत प्रचलित है कि इतिहास अपने को दुहराता है। इसका तात्पर्य यह है कि समान परिस्थितियों में त्रुटियों की पुनरावृत्ति होती है।[1]

---

1. राय, पारसनाथ "अनुसंधान की विधियां एवं प्रक्रियाएं– ऐतिहासिक अनुसंधान" अनुसंधान परिचय पृ0–109–110

3.1.2. ऐतिहासिक अनुसन्धान की विशेषताएँ-

ऐतिहासिक सामग्री की कुछ मूल विशेषताएँ हैं जो उसे अन्य प्रकार से अलग करती हैं।

1. इतिहास की विषय–सामग्री अपरिवर्तनीय भूतकालीन परिधि में बँधी होती हैं। भूतकालीन घटनाओं को न तो प्रस्तुत कर सकते हैं न उनमें परिवर्तन कर सकते हैं। यह बन्द प्रकार के आँकड़े होते हैं, जबकि विज्ञान के अन्तर्गत अनुसन्धानकर्ता ऐसी सामग्री पर कार्य करता है जो खुली हुई है और उसे पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है।
2. ऐतिहासिक आँकड़ों की एक विशेषता यह है कि वे भूतकालीन घटनाओं के अभिलेख के रूप में ही मिलते हैं जिनका वर्तमान अध्ययन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। वास्तव में भूतकालीन अवशेषों के आधार पर उन घटनाओं को सजीव रूप में चित्रित करने का प्रयास किया जाता है।
3. ऐतिहासिक आँकड़ों के विश्लेषण में व्यक्तिगत पक्षपात के लिए बहुत स्थान होता है। अतः ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता को ऐतिहासिक आँकड़ों के विश्लेषण में बहुत ही सतर्क रहना पड़ता है। वह घटना का प्रत्यक्ष दर्शक नहीं है। निरीक्षण करने और रिपोर्ट देने वाला कोई और था अतः वस्तुनिष्ठता लाने में कठिनाई होती है।
4. विज्ञान में वर्तमान के आधार पर भविष्य के विषय में पूर्व कथन

करते हैं किन्तु इतिहास में वर्तमान के आधार पर भूत का विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं।

इन विशेषताओं के कारण ऐतिहासिक अनुसन्धान अन्य अनुसन्धानों से भिन्न होता है और इन्हें ध्यान में रखकर कार्य करने वाला ही सफल होता है।

वास्तव में ऐतिहासिक अनुसन्धान को उचित रूप में पूर्ण करना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि सही आंकड़े प्राप्त करने में बड़ी कठिनाई होती है।

ऐतिहासिक अनुसन्धान क्या है?–

1. "ऐतिहासिक अनुसन्धान का सम्बन्ध ऐतिहासिक समस्याओं के वैज्ञानिक विश्लेषण से है। इसके विभिन्न पद भूत के सम्बन्ध में एक नयी सूझ पैदा करते हैं। जिसका सम्बन्ध वर्तमान और भविष्य से होता है।"[1] **वेस्ट (1963) के अनुसार**
2. "ऐतिहासिक अनुसन्धान भूत का विश्लेषण करता है। इसका उद्देश्य भूतकालीन घटनाक्रम, तथ्य और अभिवृत्तियों के आधार पर ऐसी सामाजिक समस्याओं का चिन्तन एवं विश्लेषण करना है जिनका समाधान नहीं मिल सका है। यह मानव–विचारों और क्रियाओं के विकास की दिशा की खोज करता है जिसके द्वारा सामाजिक क्रियाओं के लिए आधार प्राप्त हो सकें।"[2] **हिटनी (1963) के अनुसार**

---

1. राय पारसनाथ "अनुसन्धान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पृ0 110–111
1. J.W.best, Research in Education. P. 86.
2. R.L. Whitney, the Elements of Research. P. 192.

3.1.3. ऐतिहासिक अनुसंधान की समस्याएँ-

1. उपयुक्त समस्या का चयन एक कठिन समस्या है। समस्या ऐसी होनी चाहिए जिसका समुचित अध्ययन एवं विश्लेषण सम्भव हो। अधिकतर प्रारम्भिक अनुसंधानकर्ता बड़ी विस्तृत समस्या ले लेते हैं, जिसका निर्वाह कठिन हो जाता है। अतः समुचित सीमांकन आवश्यक है। विद्वानों का विचार है कि अनुसंधान में किसी व्यापक समस्या के सर्वेक्षण मात्र में उत्तम होगा, यदि संक्षिप्त समस्या का गहन अध्ययन किया जाय।
2. उपयुक्त परिकल्पना के निर्माण में भी कठिनाई आती है, जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इससे दिशा–निर्देश मिलता है। उपयुक्त परिकल्पना के अभाव में ऐतिहासिक आंकड़ों की प्राप्ति निरूद्देश्य संग्रह मात्र हो जाती है। जिसके आधार पर वर्तमान का समुचित विश्लेषण और भविष्य के लिए पूर्व कथन कठिन हो जाता है।
3. आंकड़ों का संग्रह और विश्लेषण भी अनेक कठिनाईयाँ प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक अनुसंधानकर्ता उस काल की घटनाओं का प्रत्यक्ष दर्शक तो नहीं होता, उसे प्राप्त सामग्री पर विश्वास करना पड़ता है तथा अपनी सूझ–बूझ से निष्कर्ष निकालना पड़ता है। अतः विश्वसनीय आंकड़ों की प्राप्ति के साथ ही साथ उनका समुचित विश्लेषण भी कठिन होता है। इसके लिए अनुसंधानकर्ता में उच्च कोटि की कल्पना, बुद्धिमत्ता तथा सूझ आवश्यक है।
4. ऐतिहासिक अनुसंधानकर्ता प्राप्त सामग्री का विश्लेषण करते

समय बहुधा उस काल की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति एवं व्यवस्था का समुचित ध्यान नहीं रखते जो किसी भी क्षेत्र में व्यक्तियों के चिन्तन तथा व्यवहार को बड़ी सीमा तक प्रभावित करती है। अतः इनके संदर्भ में ही विचार संगत होगा।

3.1.4. ऐतिहासिक अनुसंधान के मूल उद्देश्य-

1. ऐतिहासिक अनुसंधान का मूल उद्देश्य के आधार पर वर्तमान को समझना एवं भविष्य के लिए सतर्क होना है। अधिकांश वस्तुओं का कोई ऐतिहासिक आधार होता है। अतः किसी समस्या, घटना अथवा व्यवहार से समुचित मूल्यांकन के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होना आवश्यक है। अनुशासन सम्बन्धी वर्तमान धारणा, शिक्षक के स्थान पर छात्र को महत्व, छात्र–परिषदों का गठन एवं उन पर नियंत्रण, व्यक्ति की वर्तमान अवधारणा, मापन और मूल्यांकन आदि सभी एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विकसित हुए हैं और आज वर्तमान रूप में है। अतः ऐतिहासिक अनुसन्धान का मूल उद्देश्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में इन समस्याओं का मूल्यांकन करना है।
2. ऐतिहासिक अनुसंधान का दूसरा प्रमुख उद्देश्य शिक्षा–मनोविज्ञान अथवा अन्य सामाजिक विज्ञानों में चिन्तन को नयी दिशा देने एवं नीति निर्धारण में सहायता करना है। वह यह भी स्पष्ट करता है

---

1. राय, पारसनाथ, अनुसन्धान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा पृ0 111 से 112, द्वादशम संस्करण 2006.

कि आज नवीन कही जाने वाली वस्तुओं में नवीनता कहाँ तक है तथा बीच के परिवर्तनों के क्या प्रभाव पड़े हैं। इस प्रकार ऐतिहासिक अनुसंधान त्रुटियों के प्रति सतर्क कर मार्ग प्रशस्त करता है।

3. ऐतिहासिक अनुसंधान का तीसरा उद्देश्य वैज्ञानिकों को भूतकालीन तथ्यों के प्रति जिज्ञासा की तृप्ति एवं भूत, वर्तमान तथा भविष्य का सम्बन्ध स्थापन है।

4. ऐतिहासिक अनुसंधान का एक उद्देश्य को किसी क्षेत्र विशेष के व्यावसायिक कार्यकर्ताओं के लिए पूर्व अनुभव के आधार पर भावी कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित करने में सहायता करना है।

5. यह इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि किन परिस्थितियों में, किन कारणों से व्यक्ति अथवा व्यक्तियों ने एक विशेष प्रकार का व्यवहार किया है, उसका प्रभाव उसके ऊपर तथा समाज पर क्या पड़ा है।

6. ऐतिहासिक अनुसंधान इस तथ्य का भी विश्लेषण करता है कि आज जो सिद्धान्त तथा क्रियाएं व्यवहार में है, उसका उद्भव एवं विकास किन परिस्थितियों में हुआ है।

3.1.5 ऐतिहासिक अनुसन्धान का महत्व-

1. इतिहास भूतकालीन घटनाओं के परिणामों को स्पष्ट करते हुए उसके गुण दोषों से परिचित कराता है। ऐतिहासिक अनुसन्धान शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में स्थित वर्तमान क्रियाओं और

प्रवृत्तियों के आधार पर सम्यक विवेचन करता है। इससे किसी उलझी समस्या का हल ढूंढने में सहायता मिलती है। अतः ऐतिहासिक अनुसंधान वर्तमान शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का हल ढूंढने में सहायक होता है।

2. ऐतिहासिक अनुसंधान शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में सिद्धान्त एवं क्रिया–पक्ष की आलोचनात्मक व्याख्या करता हुआ उनके वर्तमान स्वरूप की ऐतिहासिक एवं विकासात्मक स्थिति को स्पष्ट करता है।

3. ऐतिहासिक अनुसंधान भूतकालीन त्रुटियों से परिचित कराकर भविष्य के प्रति सतर्क करता है।

4. शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक अनुसंधान समाज एवं विद्यालय के सम्बन्धों की व्याख्या करता है तथा मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में इसके कारणों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

5. ऐतिहासिक अनुसंधान शिक्षा तथा मनोविज्ञान के लिए वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करता है।

6. यहाँ शिक्षा शास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों तथा शोध कार्य में लगे अन्य व्यक्तियों के प्रति सम्मान प्रकट करता है।

7. ऐतिहासिक अनुसंधान अंधविश्वासों एवं भ्रमों का निवारण करता है।

3.1.6. ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता के गुण-

ऐतिहासिक अनुसन्धान का कार्य अत्यन्त कठिन है। अतः वही

व्यक्ति इसमें सफल हो सकता है, जिसमें निम्नलिखित गुण हों–

(1) सांस्कृतिक रूचि

(2) विश्व बन्धुत्व को भावना

(3) विशिष्ट क्षेत्र का गहन ज्ञान

(4) निष्पक्षता एवं मानसिक सन्तुलन

(5) स्वच्छ मस्तिष्क व क्रमिक अध्ययन में रूचि, तथा

(6) विषय से परिचय–क्षमता।

3.1.7. ऐतिहासिक अनुसन्धान के प्रकरण-

ऐतिहासिक अनुसन्धान की विषय–वस्तु चुनने में निम्नलिखित दो तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक है– (1) ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करना जिसका पता न लगा हो, तथा (2) पुराने अनुसंधान का संशोधन।

अच्छे प्रकरण प्राप्त करने के उपाय–

1. विषय–विशेष का गहन अध्ययन।
2. सन्देहात्मक बुद्धि से साहित्य–सर्वेक्षण।
3. अन्वेषणात्मक एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण।

3.1.8. ऐतिहासिक अनुसन्धान के विभिन्न पद-

ऐतिहासिक अनुसन्धान के निम्नलिखित पद होते हैं–

1. आंकड़ों का संग्रह
2. आंकड़ों का विश्लेषण तथा

---

1. राय, पारसनाथ, अनुसन्धान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पृ0 112 से 113, द्वादशम संस्करण 2006.

3. उपर्युक्त के आधार पर तथ्यों के विश्लेषण एवं रिपोर्ट

डेविड फॉक्स ने ऐतिहासिक अनुसन्धान के निम्नलिखित पद बताये हैं–

1. यह निश्चय करना कि समस्या का समाधान ऐतिहासिक विधि से होगा।
2. किस प्रकार के आँकड़ों की आवश्यकता है, इसका निश्चय करना।
3. पर्याप्त आँकड़े प्राप्त हो, इसका निश्चय करना।
4. निम्नलिखित माध्यमों से आँकड़े प्राप्त करके प्रारम्भ करना।

   (अ) ज्ञात आँकड़े

   (ब) ज्ञात श्रोतों से नवीन आँकड़े प्राप्त करना–

   प्राथमिक स्रोत

   माध्यमिक स्रोत

   (स) नवीन और पूर्व अज्ञात आँकड़ों की खोज–

   आंकड़ों के रूप में

   स्रोत के रूप में
5. प्रतिवेदन लिखना प्रारम्भ करना।
6. आँकड़ों का परीक्षण करते जाना।
7. अनुसंधान–प्रतिवेदन का वर्णनात्मक भाग पूर्ण करना।
8. अनुसंधान–प्रतिवेदन का विश्लेषणात्मक भाग पूर्ण करना।
9. आँकड़ों का वर्तमान के प्रयोग और भविष्य के लिए परिकल्पना का निर्माण करना।

3.1.9. ऐतिहासिक अनुसन्धान में आँकड़ों की प्राप्ति के साधन-

जिज्ञासु अनुसन्धानकर्ता के लिए ऐतिहासिक साधन यह विचित्र विश्व ही है। सत्य की खोज के लिए उसे उसी विश्व में भ्रमण करना पड़ता है। यह विचित्र विश्व गुप्त रहस्यों तथा आच्छन्न तथ्यों से परिपूर्ण है। इन रहस्यों का उद्‌घाटन तथा तत्वों का विश्लेषण एवं अन्वेषण इतिहासकार का मुख्य लक्ष्य होता है। ऐतिहासिक साधनों का विभाजन निम्नवत् है।–

3.1.9.1 प्राथमिक साधन–

वे साधन हैं, जो घटना, व्यक्ति या संस्था के विषय में प्रथम साक्षी का कार्य करते हैं। इस प्रकार के साधन घटना से तात्कालिक सम्बन्ध रखने वाले होते हैं जिनके समक्ष वास्तव में घटना घटित होती है। इस प्रकार के साधनों में निम्नलिखित महत्वपूर्ण है।

(क) सचेतन रूप से प्रदर्शित सूचनाएं–

लिखित साधन– जैसे वृतान्त, कथा, जीवन–वृतान्त, दैनन्दिनी, वंशावलियां तथा शिलालेख आदि।

मौखिक परम्परा– जैसे गाथाएँ–कहानियाँ, उपाख्यान आदि।

कलात्मक उपलब्धियाँ– जैसे ऐतिहासिक चित्र, मूर्तियाँ, सिक्के आदि।

(ख) अवशेष अथवा अचेतन प्रमाण पत्र– यथा, मानवीय अवशेष, भवन, अस्त्र–शस्त्र, वस्त्र, एवं ललित कलाएं आदि।

इन अवशेषों से तात्कालीन घटना, काल विशेष या व्यक्ति विशेष के विषय में प्राथमिक ज्ञान प्राप्त होता है।

3.1.9.2 द्वितीयक साधन–

ऐतिहासिक घटना या व्यक्ति के विषय में जो कुछ तथ्य प्रदान करते हैं, उनकी आवृत्ति उन साधनों के अन्तर्गत प्रत्यक्षतः समाहित नहीं रहती। एक व्यक्ति जो ऐतिहासिक तथ्य के विषय में तात्कालीन घटना से सम्बन्धित व्यक्ति के मुंह से सुने–सुनाये वर्णन को अपने शब्दों में व्यक्त करता है, ऐसे वर्णन को द्वितीयक साधन कहते हैं। इनमें यद्यपि सत्य का अंश रहता है, किन्तु प्रथम साक्षी से द्वितीय, श्रोता तक पहुंचते–पहुंचते वास्तविकता में कुछ परिवर्तन आ जाता है, जिससे उसके दोष–मुक्त होने की सम्भावना रहती है।

3.2 शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक इतिहास के साधन- घटना की रिपोर्ट-

इसके अन्तर्गत लिखित प्रमाण पत्र तथा ऐतिहासिक महत्व की वस्तुओं को लिया गया है। उदाहरणार्थ, विद्यालय का वातावरण, विद्यालय भवन एवं सज्जा, छात्रों के सामूहिक चित्र, शैक्षिक क्रिया अथवा मनोवैज्ञानिक प्रयोग में लगे अध्यापकों, मनोवैज्ञानिकों, छात्रों आदि के चित्र, डिप्लोमा, उपस्थित रजिस्टर, प्रमाण पत्र के नमूने, बैंक–अभिलेख, पाठ्य पुस्तकें, अभ्यास पुस्तिकाएं मानचित्र, डिजाइन

---

1. राय पारसनाथ "अनुसंधान की विधियाँ एवं प्रक्रियाएं–ऐतिहासिक अनुसंधान" अनुसंधान–परिचय (पृ0 114).

आदि। एच.जी.गुड के अनुसार किसी घटना–विशेष उल्लेख जब तक नहीं किया जाता, इन्हें अवशेष कहते हैं, उदाहरणार्थ–

साधारण प्रमाण पत्र अथवा उपस्थिति रजिस्टर का नमूना अवशेष है, परन्तु यदि उस पर किसी छात्र का पूर्ण विवरण लिख दिया जाय तो वह लिखित प्रमाण पत्र हो जाता है। कुछ प्रमाण–पत्र निम्नलिखित है–

क. वैधानिक एक्ट– जैसे संविधान, कानून चार्टर आदि

ख. अदालती फैसले

ग. कार्यकारिणी या अन्य कार्यालय सम्बन्धी लेखें

घ. समाचार पत्र और पत्रिकाएँ

ङ. निजी सामग्री

च. साहित्यिक सामग्री आदि।

3.2.1 ऐतिहासिक आँकड़ों के साधनों का संग्रह एवं प्रयोग–

आँकड़ों का संग्रह करने के बाद विशेषज्ञों द्वारा प्रयोग हेतु परामर्श लेना चाहिए इसके लिए एक तालिका बनानी होगी। संकलित आंकड़ों को विभिन्न प्रकरणों में विभाजित कर उनका वर्गीकरण कर लेंगे, जैसे ''नालन्दा विश्वविद्यालय के अनुसंधान' के लिए शिक्षा किस स्थान पर दी जाती थी, कार्यालय कहां पर था, पाठ्यक्रम क्या था, पाठ्य–पुस्तकें कैसी थीं परीक्षा–प्रणाली क्या थी– आदि की योजना बनानी होगी और इसके अनुकूल प्रमाणित साधनों को सुव्यवस्थित करना होगा।।

3.2.2 आँकड़ों की आलोचना या मूल्यांकन–

आँकड़ों की आलोचना अथवा मूल्यांकन दो प्रकार का होता है, जो इस धारण पर आधारित होता है कि यदि आँकड़े सत्य हैं, तो उनसे लिखा गया इतिहास भी सत्य होगा।

आँकड़ों का मूल्यांकन-

आँकड़ों के संग्रह के साथ–साथ उनका मूल्यांकन भी करना होता है कि किसे तथ्य माना जाय, किसे सम्भावित माना जाय और किस आँकड़े को भ्रम पूर्ण माना जाय? इसके लिए दो तथ्यों को ध्यान में रखते हैं।

1. आन्तरिक क्रमबद्धता– जिन आँकड़ों में आन्तरिक क्रमबद्धता नहीं होगी। अर्थात विरोधभास का अभाव हो, वे सत्य के अधिक निकट होंगे।

2. वाह्य क्रमबद्धता– इसका तात्पर्य यह है कि अन्य साधनों से प्राप्त सूचनाओं से इसका विरोध न हो।

तथ्यपूर्ण कैसे माने?

1. यदि दो प्राथमिक स्रोत एक ही तथ्य पर सहमत हों।
2. एक प्राथमिक स्रोत तथा एक माध्यमिक स्रोत का एक हो।
3. उस तथ्य विरोध किसी ने न किया हो।

उपर्युक्त तीनों विशेषताओं के आधार पर किसी आँकड़े को तथ्यपूर्ण मान लेते हैं, उसके पश्चात ही उसकी समालोचना प्रारम्भ करते हैं।

---

1. राय, पारसनाथ, "अनुसन्धान परिचय" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा पृ0 115. द्वादशम संस्करण 2006.

1. वाह्य आलोचना-

इसमें इस तथ्य की जाँच करते हैं कि प्राप्त आँकड़ा या प्रमाण पत्र अपने वाह्य स्वरूप की दृष्टि से उचित है अथवा नहीं। इसके अन्तर्गत लिखित प्रमाण पत्र की यथार्थता की जाँच की जाती है। वाह्य आलोचना के अन्तर्गत आँकड़ों के रूप, रंग, समय, स्थान तथा परिणाम की दृष्टि से यथार्थता की जाँच करते हैं। यह देखते हैं कि प्राप्त आँकड़ा जब लिखा गया, जिस स्याही से लिखा गया, लिखने में जिस शैली का प्रयोग किया गया तथा जिस प्रकार की भाषा, लिपि, रचना, हस्ताक्षर आदि प्रयुक्त है, वे सभी तथ्य मौलिक घटना के समय उपस्थित थे, या नहीं। यदि नहीं तो आंकड़ा जाली है। इसके परीक्षण हेतु निम्न तथ्यों पर ध्यान देते हैं।

1. लेखक कौन था तथा उसका चरित्र और व्यक्तित्व कैसा था?
2. सामान्य रिपोर्टर के रूप में उसकी योग्यताएं क्या थी?
   (अ) सम्बन्धित घटना में रूचि कैसी थी?
   (ब) घटना का निरीक्षण उसने किस स्थिति में किस मनः स्थिति से किया था?
   (स) घटना की रिपोर्ट और उसके अध्ययन के लिए उसे क्या आवश्यक सामान्य और प्राविधिक ज्ञान उपलब्ध था?
4. घटना के कितने समय पश्चात प्रमाण पत्र लिखा गया?
5. प्रमाण–पत्र किस प्रकार लिखा गया– स्मरण द्वारा, परामर्श द्वारा, देखकर या पूर्व ड्राफ्टों को मिलाकर?

6. लिखित प्रमाण पत्र अन्य प्रमाण पत्रों से कहाँ तक मिलता है?

आँकड़ों की यथार्थता का ज्ञान करने हेतु इतिहासकारों ने अलग–अलग विज्ञानों का अपने क्षेत्र में प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ, शिलालेखों का अध्ययन करने के लिए इपिग्राफी, डिप्लोमा आदि का ज्ञान करने हेतु डिप्लोमेटिक्स, लिखावट का ज्ञान करने हेतु पालियोग्राफी, तारीखों का ज्ञान करने हेतु हेलोलॉजी, स्याही हेतु केमिस्ट्री आदि के प्रयोग द्वारा आंकड़े के वाह्य स्वरूप के विषय में पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त करने में सफलता मिलती है।

2. आन्तरिक आलोचना-

इस प्रकार की आलोचना का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि क्या लेखक विषय के साथ न्याय कर पाया है अथवा नहीं। इसमें निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देते हैं–

क. लेखक किसी रूप में प्रभावित तो नहीं था?

ख. क्या तथ्य की जानकारी हेतु लेखक को पर्याप्त अवसर मिला था?

ग. क्या वर्णित घटना उसने स्वयं देखी थी?

घ. क्या विश्वसनीय निरीक्षण हेतु वह सक्षम था?

ङ. क्या लेखक का कोई विशेष उद्देश्य था?

च. क्या लेखक किसी दबाव अथवा भय में था?

---

1. राय, पारसनाथ "अनुसन्धान परिचय" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा पृ0 116, द्वादशम संस्करण 2006.

छ. घटना के कितने दिन पश्चात उसने लिखा है?

ज. उसके लेख तथा अन्य लेखों में कितनी समानता है?

झ. लेखक की राष्ट्रीयता, पेशा, स्थिति, वर्ग, दलों से सम्बन्ध, धर्म, प्रशिक्षण आदि के विषय में क्या ज्ञात है?

ञ. अभिलेखों के तैयार करने के लिए उसमें प्रशिक्षण, मानसिक क्षमता, सामाजिक सार, अवधारणाएँ, रूचियों, भाषायी आदत आदि कैसी थी?

ट. लेखक सही अथवा गलत?

ठ. अभिलेख में कोई धोखा तो नहीं किया गया?

ड. लेखक ने अभिलेख क्यों तैयार किया?

ढ. क्या लेखक ऐसी स्थिति में तो नहीं रख दिया गया था, जिससे उसे सत्य को छिपाना पड़ा हो?

ण. क्या उसने अधिकारियों को प्रसन्न कर उन्नति चाही थी?

त. क्या उसमें धार्मिक, राजनीतिक अथवा जातीय पूर्व–धारणा प्रबल थी?

थ. क्या जनता को प्रसन्न करने हेतु उसने संवेग उभारा है?

द. क्या उसने साहित्यिक प्रवाह में सत्य को छिपाया है?

इन प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर ऐतिहासिक आँकड़ों की आन्तरिक समालोचना करने के पश्चात ही अनुसन्धानकर्ता किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है।

धनात्मक तथा ऋणात्मक ऐतिहासिक समालोचना-

आन्तरिक समालोचना को उस समय धनात्मक कहते हैं, जब अनुसंधानकर्ता का प्रयत्न अभिलेख सत्य, वास्तविक और अक्षरशः अर्थ ज्ञात करने का होता है। आन्तरिक समालोचना की उस समय ऋणात्मक कहते हैं, जब अनुसंधानकर्ता का प्रत्येक प्रयत्न अभिलेख की अविश्वसनीयता को ज्ञात करना चाहता है।

शिक्षा तथा मनोविज्ञान में ऐतिहासिक अनुसन्धान की प्रक्रिया–

ऐतिहासिक अनुसन्धानकर्ता को निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाने में सरलता होगी–

1. ऐसे क्षेत्र का चुनाव करना, जिसमें पर्याप्त प्रमाण एवं अनुसंधान–सामग्री प्राप्य हो।
2. जहाँ तक सम्भव हो, प्राथमिक साधन ही प्रयोग करें।
3. आवश्यकतानुसार सामान्य रूप से माध्यमिक साधनों का भी प्रयोग कर सकते हैं।
4. सुपरिभाषित समस्या पर कार्य प्रारम्भ करें।
5. व्यक्तिगत पक्षपातों से तदैव बचते रहें।
6. विभिन्न परिस्थितियों एवं वातावरण की स्थिति के संदर्भ में अध्ययन को आगे बढ़ायें।
7. कार्यकारण सम्बन्ध पर विशेष ध्यान दें।

---

1. राय, पारसनाथ "अनुसंधान परिचय" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पृ0 117, द्वादशम संस्करण 2006.

8. विभिन्न आंकड़ों के आधार पर अर्थपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त करें।

निम्नलिखित तथ्यों से बचने का प्रयास करें–

1. आंकड़ों को अत्यन्त सरल बनाने का दुष्प्रयास न करें।
2. स्वल्प सामग्री के आधार पर ही सामान्यीकरण न करें।
3. विशिष्ट और सामान्य तथ्यों को एक दृष्टि से न देखें।
4. बहुत व्यापक समस्या न लें, जो पूर्ण ही न हो।
5. माध्यमिक आँकड़ों पर ही विश्वास न कर लें।
6. अनेक व्यक्तियों द्वारा प्रदत्त तथ्यों को उचित मानने से न चूकें।
7. व्यक्तिगत पक्षपात से बचने का प्रयास करें।
8. वर्णन नीरस न हो।
9. शब्दों के पूर्व–निश्चित अर्थ को छोड़कर नये अर्थ में उसे न लें। अर्थ परिवर्तित होते रहते हैं।

ऐतिहासिक अनुसन्धान का क्षेत्र-

वैसे तो ऐतिहासिक अनुसन्धान का क्षेत्र उतना ही व्यापक है, जितना स्वयं जीवन, किन्तु संक्षेप में इसके क्षेत्र में निम्नलिखित को सम्मिलित कर सकते हैं।

1. बड़े शिक्षा शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों के विचार।
2. संस्थाओं एवं प्रयोगशालाओं द्वारा किये गये कार्य।
3. विभिन्न कालों में शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक विचारों के विकास की स्थिति।
4. एक विशेष प्रकार की विचारधारा का प्रभाव और उसके स्रोत।

5. शिक्षा के लिए संवैधानिक व्यवस्था।

6. पुस्तक सूची की तैयारी आदि।

ऐतिहासिक शोध-प्रबन्ध के मूल्यांकन के आधार-

1. समस्या अनुसंधान के योग्य हो।

2. निश्चित लेखक, स्थान और समय के अनुसार स्रोत का वर्गीकरण हो।

3. अध्ययन परिसीमित हो।

4. शोध–प्रबन्ध की व्यवस्था तार्किक आधार पर हो।

5. तथ्यों की समुचित व्याख्या की गयी हो।

6. स्रोत पर्याप्त रूप में हो तथा प्राथमिक एवं माध्यमिक, दोनों प्रकार के साधन प्रयोग में आये हो।

7. साधन उचित और विश्वसनीय हो।

8. शोध–प्रबन्ध भावी अनुसंधान के लिए सुझाव प्रस्तुत करें।

9. अध्ययन में समय एवं धन का ध्यान रखा गया हो।

10. कम से कम दो स्वतंत्र साक्षियों द्वारा तथ्यों की जांच कर ली गयी हो।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर किसी ऐतिहासिक शोध–प्रबन्ध का मूल्यांकन किया जा सकता है।

---

1. राय, पारसनाथ "अनुसंधान परिचय" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पृ0 118, द्वादशम, संस्करण 2006.